


| | | |
|---|--|--|
|  सत्यमेव जयते | राजस्थान राजपत्र विशेषांक | RAJASTHAN GAZETTE Extraordinary |
| | साधिकार प्रकाशित | Published by Authority |
| | ज्येष्ठ 20, शुक्रवार, शाके 1944-जून 10, 2022 <i>Jyaistha 20, Friday, Saka 1944- June 10, 2022</i> | |

भाग-1(ख)

महत्वपूर्ण सरकारी आजायें।

वन विभाग(क)

विज्ञप्ति

जयपुर, मई 26, 2022

संख्या प. 2 (8) वन/2022 :-चूंकि निम्नलिखित अनुसूची में दिखाई गई वन-भूमि सरकार की सम्पत्ति है अथवा उनमें सरकार के स्वत्व हैं अथवा सरकार उनकी सम्पूर्ण वन-उपज अथवा उसके किसी अंश को स्वत्वधारी (Entitled) है।

और चूंकी सरकार उपर्युक्त वन-भूमि तथा बंजर-भूमि को राजस्थान फोरेस्ट एक्ट, 1953 की धारा 29 उप-धारा (1) के अन्तर्गत रक्षित वन (Protected Forest) घोषित करने का विचार रखती है।

और चूंकि पूर्वोक्त भूमि में अथवा उस पर सरकारी अथवा वैयक्तिक अधिकारों की सीमा तथा स्वरूप अभी तक किसी भी प्रकार से लेखबद्ध नहीं किये गये हैं।

और चूंकि सरकार यह भी विचार रखती है कि पूर्वोक्त वन-भूमि अथवा बंजर-भूमि में अथवा उन पर सरकार पर वैयक्तिक अधिकारों की सीमा तथा स्वरूप के सम्बन्ध में जांच किया जाना तथा उन्हें लेखबद्ध किया जाना आवश्यक है, परन्तु चूंकि इन कार्यों के सम्पादन में जितना समय लगेगा उस बीच में सरकार के अधिकारों को क्षति पहुंचाने की आशंका है।

इसलिए अब राजस्थान फोरेस्ट एक्ट, 1953 (1953 का एक्ट, संख्या 13) की धारा 29 की उप धारा (3) के द्वारा प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए, सरकार इसके द्वारा फोरेस्ट सेटलमेन्ट ऑफिसर, असिस्टेन्ट फोरेस्ट सेटलमेन्ट ऑफिसर को पूर्वोक्त वन-भूमि अथवा बंजर-भूमि में या उन पर सरकारी तथा वैयक्तिक अधिकारों की जांच करके उन्हें लेखबद्ध करने हेतु नियुक्त करती है तथा ऐसी जांच तथा अभिलेखन तथा साध्य उसी प्रणाली में किया जायेगा जैसा कि उक्त एक्ट की धारा 6, 7, 8, 10, 11(1), 12, 13, 14, 17, 18 तथा 19 में प्रावहित है।

और उक्त एक्ट की धारा 29 की उप धारा (3) के परन्तुक (Provision) द्वारा प्रदत्त शक्तियों के अग्रेसर अनुसरण में राजस्थान सरकार उक्त जांच तथा अभिलेखन सम्पादित होने तक उक्त वन-भूमि और बंजर भूमि को इस विज्ञप्ति द्वारा रक्षित वन (Protected Forest) घोषित करती है परन्तु इससे किसी व्यक्ति या वर्ग विशेष के वर्तमान अधिकारों में किसी भी प्रकार की कमी नहीं आयेगी और न उन पर कोई प्रभाव पड़ेगा।

और सरकार उक्त एक्ट की धारा 30 द्वारा प्रदत्त शक्तियों के अग्रेसर अनुसरण में यह भी घोषणा करती है कि उक्त संरक्षित वन के वे वृक्ष जो इसके साथ संलग्न द्वितीय अनुसूची में अंकित किये गये हैं, राजपत्र में इस विज्ञप्ति के प्रकाशन की तारीख से आरक्षित (Reserved) है और पूर्वोक्त तारीख से उक्त वन में पत्थरों का हटाया जाना अथवा चूना या कोयला जलाया जाना अथवा किसी प्रकार की वन उपज का संग्रहीत किया जाना अथवा उसे किसी निर्माण प्रक्रिया का साधन बनाया जाना या हटाया जाना और उक्त वन में किसी भूमि का कृषि

अथवा भवन निर्माण अथवा पशु-पालन अथवा किसी भी अन्य प्रयोजन के लिये खण्डित किया जाना अथवा साफ किया जाना निषिद्ध करती है।

प्रथम अनुसूची (वन-भूमि और बंजर-भूमि)

द्वितीय अनुसूची (संरक्षित वृक्ष)

राज्यपाल की आज्ञा से,
बी. प्रवीण,
शासन सचिव,
वन विभाग,
शासन सचिवालय, जयपुर।

प्रथम अनुसूची

| क्र. सं. | नाम वनखण्ड | नाम तहसील | नाम जिला | सीमाए | विवरण | | |
|----------|------------|-----------|----------|---|-------|----------|------------------|
| | | | | | ग्राम | खसरा नं० | क्षेत्रफल है० मे |
| 1 | बधीन | मण्डावर | अलवर | उत्तर:- राजस्व भूमि देह हाजा दक्षिण:- सीमा ग्राम बसेई पूर्व:- काश्त रकबा व आबादी देह हाजा पश्चिम:- सीमा ग्राम दुनवास | बधीन | 363 | 15.57 |

ए० के० श्रीवास्तव,
उप वन संरक्षक,
अलवर (राज०)।

द्वितीय अनुसूची पेड़ों की सूची

| क्र.सं. | बोटनिकल नाम | हिन्दी नाम |
|---------|----------------------|----------------------|
| 1 | Anogeissus pendula | धोकडा, धो, फलधी, धोक |
| 2 | Azadirachta indica | नीम |
| 3 | Acacia nilotica | बबूल |
| 4 | Acacia catechu | खेर |
| 5 | Ziziphus nummularia | बेर |
| 6 | Acacia leucophloea | रौंझ, सफेद खेर |
| 7 | Balanites roxburghii | हींगोट |
| 8 | Prosopis cineraria | खेजडा |
| 9 | Pongamia pinnata | करंज |
| 10 | Salvadora persica | जाल |

ए० के० श्रीवास्तव,
उप वन संरक्षक,
अलवर (राज०)।

प्रारम्भिक विज्ञप्ति के प्रस्ताव के साथ उप वन संरक्षक, द्वारा प्रमाण पत्र
(जो लागू नहीं होता है उसे काट दें)

वन खण्ड - बधीन

रेंज - किशनगढबास

वन मण्डल - अलवर

1. संलग्न प्रारूप में दर्शाई गई भूमि का वर्गीकरण क्रमशः गैर मुमकिन पहाड़/ गैर कृषि पायती है।
2. वर्तमान में प्रस्तावित भूमि राजस्व लेखों में वन विभाग के नाम दर्ज है तथा मौके पर विभाग द्वारा कुछ क्षेत्रों में विकास कार्य कराया गया है/ कराना है। इनमें कोई अतिक्रमण अथवा खनन कार्य नहीं हो रहा है। प्रस्तावित भूमि वन विभाग के कब्जे में है
3. वर्तमान में कुछ क्षेत्रों में क्रमशः प्लांटेशन एवं अन्य विकास कार्य कराये गये हैं। इनमें कोई खनन कार्य नहीं हुए हैं। भविष्य में अन्य क्षेत्रों में भी विकास कार्य कराये जाने की संभावना है।
4. भूमि पर वृक्षों का घनत्व कुछ क्षेत्रों में 0.01 है तथा कुछ क्षेत्रों में नगण्य है। इस वनखण्ड में प्रमुख प्रजातियाँ बबूल, रौंझ, करंज, एवं धोक का लगभग प्रतिशत 30,30,10 एवं 5 क्रमशः है, तथा कुछ क्षेत्रों में घनत्व नगण्य है।
5. समीपवर्ती स्थित क्षेत्र/ प्रस्तावित भूमि वन भूमि है तथा चारों ओर की सीमाओं का विस्तृत उल्लेख विज्ञप्ति में कर दिया गया है।
6. वनखण्डों के वांछित मानचित्र (नक्शे) संलग्न हैं, एवं विज्ञप्ति में दिखाई गई दिशाओं सीमाओं एवं स्थिति के अनुरूप हैं। प्रस्तावित वन क्षेत्रों की सीमा को नक्शों में लाल स्याही से इंगित किया गया है।
7. प्रस्तावित वनों के प्रारूप यथा विधि पूर्व में नहीं भेजने के कई कारण रहे हैं, किन्तु अब उल्लेखित वन क्षेत्रों के कानूनी स्वरूप देने हेतु प्रचलित नियमों के अनुरूप शासकीय गजट में प्रकाशन होना नितान्त आवश्यक है, जिसमें कि इन भूमियों पर वन विभाग का साक्ष्य सिद्ध हो सके।
8. उक्त वन भूमि का पूर्व में राजपत्र में प्रकाशन नहीं हुआ है।
9. वनखण्ड में प्रस्तावित भूमि पूर्णतया वन विभाग के कब्जे में है

ए0 के0 श्रीवास्तव

उप वन संरक्षक,

अलवर (राज0)

राज्य केन्द्रीय मुद्रणालय, जयपुर।